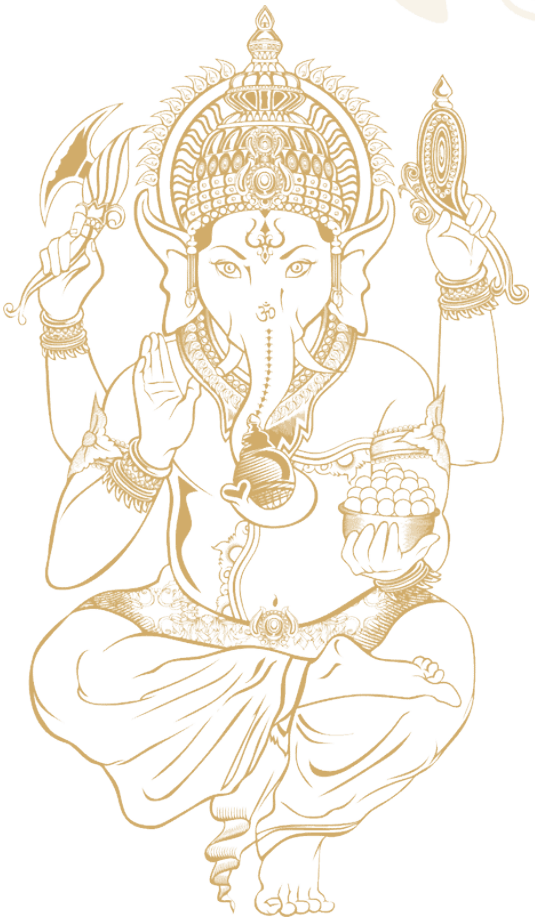

S Batra

Himanshi Saluja

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121756701

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121756701 Date: 30/03/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
10/08/1998	जन्म तिथि	13/07/1999
सोमवार	दिन	मंगलवार
घंटे 12:20:00	जन्म समय	14:33:00 घंटे
घटी 16:21:36	जन्म समय(घटी)	22:32:46 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:47:21	सूर्योदय	05:31:53
19:05:10	सूर्यास्त	19:21:24
23:50:08	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:50

तुला	लग्न	तुला
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	शुक्र
कुम्भ	राशि	कर्क
शनि	राशि-स्वामी	चन्द्र
पू०भाद्रपद	नक्षत्र	पुनर्वसु
गुरु	नक्षत्र स्वामी	गुरु
1	चरण	4
अतिगण्ड	योग	हर्षण
वणिज	करण	किंस्तुघ्न
से-सेनजित	जन्म नामाक्षर	ही-हिना
सिंह	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क
शूद्र	वर्ण	विप्र
मानव	वश्य	जलचर
सिंह	योनि	मार्जार
मनुष्य	गण	देव
आद्य	नाड़ी	आद्य
मेष	वर्ग	मेष

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 12वर्ष 8मा 19दि		18:11:30	तुला	लग्न	तुला	22:52:33	गुरु 3वर्ष 5मा 0दि	
शनि		23:37:13	कर्क	सूर्य	मिथु	26:42:07	बुध	
30/04/2011		22:43:56	कुंभ	चंद्र	कर्क	00:29:06	12/12/2021	
30/04/2030		29:20:44	मिथु	मंगल	तुला	09:07:46	13/12/2038	
शनि	03/05/2014	00:10:23	सिंह व	बुध व	कर्क	15:38:13	बुध	10/05/2024
बुध	10/01/2017	03:21:17	मीन व	गुरु	मेष	08:17:51	केतु	07/05/2025
केतु	19/02/2018	02:22:46	कर्क	शुक्र	सिंह	06:32:45	शुक्र	07/03/2028
शुक्र	21/04/2021	09:45:58	मेष	शनि	मेष	21:24:59	सूर्य	11/01/2029
सूर्य	03/04/2022	07:37:19	सिंह	राहु व	कर्क	19:09:30	चन्द्र	13/06/2030
चन्द्र	02/11/2023	07:37:19	कुंभ	केतु व	मक	19:09:30	मंगल	10/06/2031
मंगल	11/12/2024	16:39:10	मक व	हर्ष व	मक	21:56:18	राहु	27/12/2033
राहु	18/10/2027	06:28:22	मक व	नेप व	मक	09:28:40	गुरु	03/04/2036
गुरु	30/04/2030	11:28:14	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	14:14:21	शनि	13/12/2038

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:50:08 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:50

लग्न-चलित

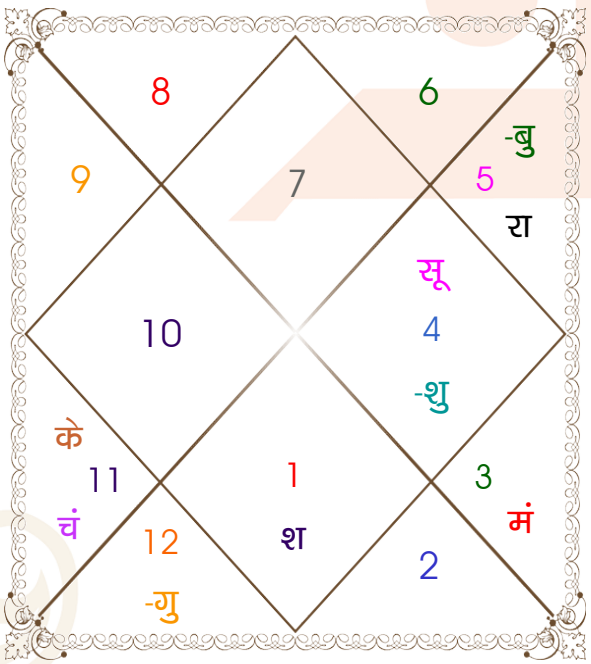

लग्न-चलित

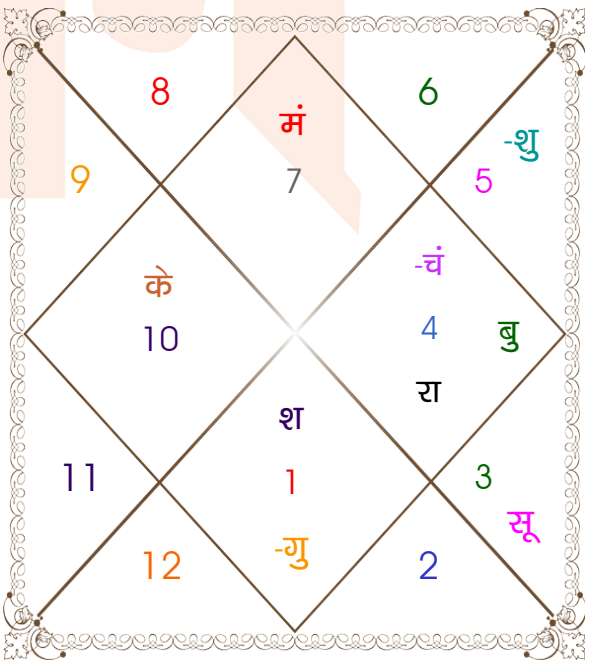

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	सिंह	मार्जार	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	चन्द्र	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	कुम्भ	कर्क	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	11.50		

कुल : **11.5 / 36**

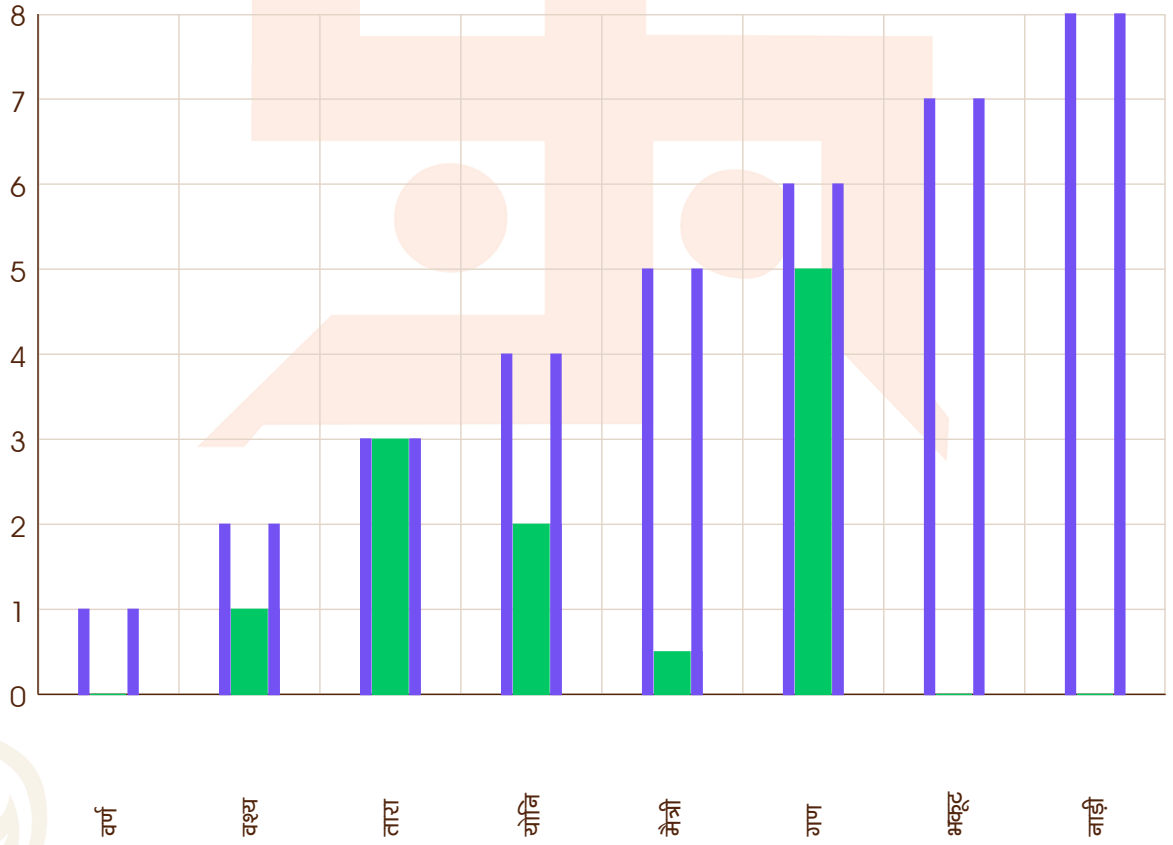

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

ै ठंजतं का वर्ग मेष है तथा भ्पउंदीपैं सनरं का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसारै ठंजतं और भ्पउंदीपैं सनरं का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

ै ठंजतं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

भ्पउंदीपैं सनरं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहुै ठंजतं कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ै ठंजतं तथा भ्पउंदीपैं सनरं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

` ठंजतं  का वर्ण शूद्र है तथा भ्पउंदीप`सनरं का वर्ण ब्राह्मण है। क्योंकि भ्पउंदीप`सनरं का वर्ण` ठंजतं के वर्ण से ऊँचा है जिसके कारण यह अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण दोनों के बीच हमेशा अहं का टकराव होगा। भ्पउंदीप`सनरं  हमेशा श्रेष्ठता मनोग्रंथि से ग्रसित रहेगी तथा हमेशा स्वयं को पति से अधिक होशियार समझती रहेगी। कन्या की यही श्रेष्ठता का स्व अहसास उसके पति एवं बच्चों के विकास को बाधित कर रहेगा। साथ हीं` ठंजतं के अन्दर हीन भावना घर कर जायेगी।

वश्य

` ठंजतं  का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं भ्पउंदीप`सनरं का वश्य जलचर है अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। मनुष्य एवं जलचर दोनों प्रकृति के अंग हैं यद्यपि कि दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग होते हैं तथा प्रकृति ने दोनों के अलग-अलग कार्य एवं उत्तरदायित्व निर्धारित किये हैं। इसलियें` ठंजतं  एवं भ्पउंदीप`सनरं दोनों सामान्यतः एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तथा एक-दूसरे के लिए हानिकारक सिद्ध नहीं होंगे। सामान्यतः` ठंजतं  भ्पउंदीप`सनरं पर नियंत्रण स्थापित करने में समर्थ होगा। हालांकि यह अनुकूल मिलान नहीं है क्योंकि` ठंजतं  हमेश भ्पउंदीप`सनरं के ऊपर हावी रहेगा।

तारा

` ठंजतं  की तारा जन्म तथा भ्पउंदीप`सनरं की तारा भी जन्म है। अतः समान तारा होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों में अगाध प्रेम, सहयोग आपसी विश्वास तथा समझदारी की भावना बनी रहेगी। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विश्वास पात्र बने रहेंगे तथा पूर्ण सक्षमता से मिलकर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे। इनकी संतान बुद्धिमान, कर्त्तव्यपरायण तथा सफल होगी।

योनि

` ठंजतं  की योनि सिंह है तथा भ्पउंदीप`सनरं की योनि मार्जार है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या

कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में ै ठंजतं का राशि स्वामी भ्पउंदीप ैसनरं के राशि स्वामी से शत्रु का संबंध रखता है। जबकि भ्पउंदीप ैसनरं का राशि स्वामी ै ठंजतं के राशि स्वामी के साथ सम रहता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी का राशि स्वामी दूसरे के लिए शत्रु किंतु दूसरा उसे सम मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि यह बहस कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो सकती है।

गण

 ै ठंजतं का गण मनुष्य तथा भ्पउंदीप ैसनरं का गण देव है। अतः यह मिलान उत्तम मिलान है। ऐसे मिलान में भ्पउंदीप ैसनरं सतोगुणी होंगी तथा उसका स्वभाव दयालु, मृदु, सौम्य तथा कोमल होगा है जो कि एक महिला का नैसर्गिक गुण है तथा अन्य सभी लोग भी इन्हीं गुणों की अपेक्षा करेंगे। जबकि दूसरी ओर ै ठंजतं व्यावहारिक, मिलनसार, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षी होंगे। जोकि इस भौतिकवादी, विश्व के पुरुष का नैसर्गिक गुण होता है। इन गुणों एवं योग्यताओं के कारण ै ठंजतं अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार एवं समाज की हर अपेक्षा को पूरा करने में सक्षम रहेंगे तथा सभी इनसे खुश भी रहेंगे।

भकूट

 ै ठंजतं से भ्पउंदीप ैसनरं की राशि षष्ठम भाव में स्थित है तथा भ्पउंदीप ैसनरं से ै ठंजतं की राशि अष्टम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक दोष लग रहा है। जिसके कारण ै ठंजतं लाइलाज बीमारी से ग्रस्त हो सकते हैं तथा अक्सर उनके जलने अथवा दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना बनी रहेगी। भ्पउंदीप ैसनरं को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं तथा परिवार के सदस्यों से वैमनस्य

होने की संभावना भी रहेगी। पति-पत्नी के बीच वैचारिक मतभेद रह सकते हैं तथा अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहेंगे। दोनों के बीच तनावपूर्ण स्थिति पूरे परिवार के लिए समस्या एवं पीड़ा बन जायेगी। मुकदमेबाजी होने से अलगाव एवं तलाक की संभावना भी रहेगी।

नाड़ी

ै ठंजतं की नाड़ी आद्य है तथा भ्पउंदीप ैसनरं की नाड़ी भी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ै ठंजतं एवं भ्पउंदीप ैसनरं दोनों की आद्य नाड़ी होने से, दम्पत्ति वात से संबंधित बीमारियों एवं रोगों के शिकार हो सकते हैं। ज्योतिषीय दृष्टि से ऐसे दम्पत्ति जिनकी नाड़ी एक ही हों, उनकी संतानें रक्ताल्पता, रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी का शिकार हो सकते हैं। वे पढ़ाई एवं कार्य में संकेन्द्रण की कमी जैसी व्याधियों एवं परेशानियों के शिकार हो सकते हैं अथवा बचपन या किशोरावस्था में ही उनकी मृत्यु हो सकती है।

मेलापक फलित

स्वभाव

` ठंजतं  की राशि वायुतत्व युक्त कुम्भ तथा भ्पउंदीप`सनरं की राशि जलतत्व युक्त कर्क राशि है। वायु एवं जलतत्व में नैसर्गिक समानता तथा मित्रता होने के कारण इनके संबंधों में मधुरता रहेगी तथा स्वभावगत समानताएं भी विद्यमान होंगी फलतः वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। अतः मिलान शुभ रहेगा।

` ठंजतं  की राशि का स्वामी शनि तथा भ्पउंदीप`सनरं की राशि का स्वामी चन्द्रमा परस्पर सम एवं शत्रुराशियों में स्थित है। अतः ऐसी ग्रह स्थिति के प्रभाव से इनके मध्य मतभेद अधिक तथा समता का भाव अल्प रहेगा। साथ ही एक दूसरे के गुणों की अपेक्षा कमियों पर विशेष ध्यान देंगे जिससे परस्पर तनाव एवं कटुता का भाव होगा। ` ठंजतं  और भ्पउंदीप`सनरं के मध्य प्रेम तथा सहानुभूति के भाव की न्यूनता रहेगी तथा सुख दुख में भी एक दूसरे को सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे जिससे वैवाहिक जीवन विशेष सुखी नहीं रहेगा ।

` ठंजतं  और भ्पउंदीप`सनरं की राशियां परस्पर षष्ठ एवं अष्टम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त अशुभ प्रभावों में वृद्धि होगी तथा अनावश्यक मतभेद विरोध एवं वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे संबंधों में कटुता की प्रबलता रहेगी। साथ ही एक दूसरे की कमियों की विशेष ध्यान रहेगा तथा आलोचनात्मक दृष्टि कोण भी होगा। अतः ऐसी स्थिति में ` ठंजतं  और भ्पउंदीप`सनरं का दाम्पत्य जीवन अशांति पूर्ण रहेगा।

` ठंजतं  का वश्य मानव तथा भ्पउंदीप`सनरं का वश्य जलचर है। मानव एवं जलचर में नैसर्गिक विषमता होने के कारण अभिरूचियों में भिन्नता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक आवश्यकताएं भी अलग रहेंगी। फलतः काम संबंधों में भी एक दूसरे को सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रखने में असमर्थ रहेंगे जिससे दाम्पत्य संबंधों में भी कटुता का भाव उत्पन्न होगा।

` ठंजतं  का वर्ण शूद्र तथा भ्पउंदीप`सनरं का वर्ण ब्राह्मण है। अतः इनकी कार्य क्षमताओं में भी विभिन्नता रहेगी। ` ठंजतं  की प्रवृति किसी भी कार्य को परिक्षम पूर्वक करने  होगी लेकिन भ्पउंदीप`सनरं धार्मिक शैक्षणिक तथा अन्य सत्कार्यो को करने में प्रवृत रहेंगी।

धन

` ठंजतं  और भ्पउंदीप`सनरं का जन्म एक ही तारा 'जनम' में हुआ है। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही भकूट एवं मंगल का प्रभाव भी आर्थिक स्थिति पर सामान्य ही रहेगा। अतः अपने वर्तमान स्रोतों से परिश्रम पूर्वक धनऐश्वर्य की प्राप्ति होती रहेगी जिससे लाभ मार्ग सामान्यतया प्रश्स्त होंगे तथा आर्थिक स्थिति से` ठंजतं  और भ्पउंदीप`सनरं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

ˆ ठंजतं को पैतृक सम्पति तथा जायदाद की प्राप्ति होगी। अतः आजीवन वे धन धान्य से युक्त रहेंगे तथा अपनी प्रतिभा, योग्यता एवं परिश्रम से उसमें उतरोत्तर वृद्धि करने में समर्थ होंगे । इस प्रकार भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करते हुए वे अपना समय आनंद पूर्वक व्यतीत करेंगे।

स्वास्थ्य

ˆ ठंजतं और भ्पउंदीपˆसनरं दोनों ही आद्य नाड़ी में उत्पन्न हुए है। अतः इन्हें नाड़ी दोष से कष्ट की अनुभूति होगी। आद्य नाड़ी का विशेष प्रभावˆ ठंजतं के स्वास्थ्य पर होगा। इसके प्रभाव से पक्षाघात आदि से वे कष्ट प्राप्त करेंगे तथा सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम से सम्पन्न होंगे जिससे दाम्पत्य जीवन की खुशी में अल्पता रहेगी। साथ ही मंगल के दुष्प्रभाव से भीˆ ठंजतं को स्वास्थ्य संबधी परेशानियां रहेगी फलतः वे धातु संबंधी रोगों से परेशानी की अनुभूति करेंगे। इससे उनकी संभोग शक्ति भी प्रभावित होगी जिससे दाम्पत्य जीवन में कलह उत्पन्न होगा एवं परस्पर असन्तुष्टि का भाव रहेगा। अतः इसके अशुभ फलों को दूर करने के लिए उन्हें नित्य हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी करने चाहिए। रहेगा। वैसे सामान्यतया ऐसी स्थिति में विवाह की उपेक्षा ही करनी चाहिए।

संतान

संतति की दृष्टि सेˆ ठंजतं और भ्पउंदीपˆसनरं का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव सेˆ ठंजतं और भ्पउंदीपˆसनरं को उचित समय पर संतति प्राप्ति होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार से विलम्ब या व्यवधान नहीं होगा। साथ ही बच्चों के मध्य अंतर भी अनुकूल रहेगा जिससे उचित मात्रा में उनका पालन पोषण करने का अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्तˆ ठंजतं और भ्पउंदीपˆसनरं के पुत्र एवं कन्याओं की संख्या बराबर रहेगी।

भ्पउंदीपˆसनरं का प्रसव सामान्य रूप से होगा तथा इसमें उन्हें किसी भी प्रकार से परेशानी या कष्ट का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही किसी प्रसूति संबधी चिकित्सा की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। अतः भ्पउंदीपˆसनरं के मन में इसके प्रति जो अनावश्यक भय या चिन्ताएं रहती है उसको दूर कर देना चाहिए तथा नियमित रूप से गर्भावस्था में डाक्टरी परीक्षण करवाने चाहिए। इस प्रकार भ्पउंदीपˆसनरं सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी तथा स्वयं भी शांति तथा स्वस्थता की अनुभूति करेंगी।

बच्चों के द्वाराˆ ठंजतं और भ्पउंदीपˆसनरं को पूर्ण सन्तुष्टि मिलेगी तथा अपनी योग्यता बुद्धिमता एवं व्यवहार कुशलता से वे अपने क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे यद्यपि माता पिता के वे आज्ञाकारी रहेंगे तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध कोई भी कार्य नहीं करेंगे तथापि माता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव तथा सम्मान का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। इस प्रकारˆ ठंजतं और भ्पउंदीपˆसनरं का पारिवारिक जीवन सुख तथा शांति से पूर्ण रहेगा तथा प्रसन्नता पूर्वक वे अपना समय व्यतीत करेंगे।

ससुराल-सुश्री

भ्पउंदीप ैसनरं के अपने सास से सामान्यतया अच्छे संबध रहेंगे तथा सास भी उसके विनम्र स्वभाव, मधुरवाणी तथा गृहणी के रूप में उससे पूर्ण प्रभावित तथा प्रसन्न रहेंगी। भ्पउंदीप ैसनरं भी अपनी सास को माता के समान व्यवहार एवं सम्मान प्रदान करेंगी तथा किसी भी गम्भीर समस्या का परस्पर सामंजस्य से समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

साथ ही उसके ससुर भी उनकी सेवा तथा आदर के भाव से प्रसन्न रहेंगे तथा भ्पउंदीप ैसनरं भी अपनी ओर से उनकी सेवा सुश्रूषा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से उन्हें यथोचित सम्मान तथा सहयोग नहीं मिलेगा तथा इनकी प्रतिद्वन्दिता का भाव परस्पर दूरी बनाए रखेगा।

इसके अतिरिक्त सास ससुर का भ्पउंदीप ैसनरं को ससुराल में पूर्ण स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा वे सच्चे मन से उसे अपने परिवार में स्वीकार करेंगे।

ससुराल-श्री

ै ठंजतं के अपनी सास से सामान्य संबध रहेंगे। वह अपनी ओर से उन्हें पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा के प्रति भी तत्पर रहेंगे। इनके मध्य कोई विशेष मतभेद नहीं रहेंगे तथा ै ठंजतं अवसरानुकूल सपत्नीक से मिलने जाया करेंगे जिससे संबधों में मधुरता के भाव की वृद्धि होगी।

ससुर के प्रति भी ै ठंजतं का आदर तथा सेवा का भाव रहेगा तथा वे भी इनको पूर्ण स्नेह तथा सहानुभूति प्रदान करेंगे साथ ही ससुर भी समय समय पर महत्वपूर्ण मामलों में ै ठंजतं का दिग्दर्शन करेंगे। लेकिन साले एवं सालियों के साथ संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मतभेद एवं तनाव की बहुलता रहेगी। साथ ही एक दूसरे के प्रति प्रतिद्वन्दिता तथा ईर्ष्या का भी भाव रहेगा। लेकिन यदि ै ठंजतं तथा वे आपस में सामंजस्य रखें तो संबधों में अनुकूलता आ सकती है। इस प्रकार ससुराल में ै ठंजतं के संबध सामान्यतया अच्छे ही रहेंगे।